देश प्यार के गीत

सम्पादक :
मधुकर

अकादेमी आफ़ आर्ट, कलचर ऐण्ड लॉङ्‌ग्वेजिज़ जम्मू/कश्मीर

दे श प्या र के गी त

K. P. SABHA PUSTAKALAYA
LIBRARY
No ....
Date............
JAMMU

सम्पादक:
मधुकर

अकादेमी आफ आर्ट, कलचर ऐण्ड लॉङ्ग्वेजिज़ जम्मू/कश्मीर

प्रकाशक :
सेकरेट्री अकादेमी जम्मू/कश्मीर

प्रथम संस्करण एक हज़ार
१९६४

मुद्रक :
क्रान्ति प्रेस, जम्मू

दो शब्द

हिन्दी में राष्ट्रीय गीतों की परम्परा बहुत ही प्राचीन है। इतिहास साक्षी है कि स्वतन्त्रता के प्रथम प्रयास से लेकर अब तक इस भाषा ने जनता के भावों, उमंगों तथा भावनाओं को पूर्ण रूप से प्रभावित किया और जनता के उत्साह को एक निश्चित दिशा में मोड़ने का भरसक प्रयत्न किया है, हिन्दी कविता की उज्ज्वल परम्परा इस कथन की साक्षी है।

गत वर्ष हमें एक महान् संकट का सामना करना पड़ा चीनी शत्रु हिमालय के शिखरों को ललकारता हुआ हमारी पवित्र भूमि पर अपने अपवित्र स्वप्न लिये धन धनाता हुआ आ पहुँचा। सारा देश एक क्षण में सजग हो उठा, सारी जाति का रक्त खौल उठा और हिन्दी कविता अपनी दूसरी जन भाषाओं के साथ साथ देश की जनता के भावों की प्रतीक बन गई। हिन्दी कवियों ने अपनी कविता साधना के बल से देश को इस चुनौती का सामना करने के लिए उभारा।

हमारी रियासत के हिन्दी भाषा के कवियों ने भी इस सम्बन्ध में काफी ओज-पूर्ण तथा वीर रस प्रधान कविताएं लिखीं। इस लघु संग्रह में हम उन में से कुछ एक ही प्रकाशित कर पाए हैं। हमें आशा है कि हमारी यह लघु भेंट सहृदय पाठकों को रुचिकर होगी। हम उन सब कवियों के आभारी हैं जिन्हों ने अपनी कविताएं इस संग्रह में प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की है।

केहरि सिंह 'मधुकर'

K. P. SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No ....
Date..........
JAMMU

कवि और कविता

सुशीला तुली

नवीन

नवीन रक्त चाहिये, नवीन भक्त चाहिये ।
नवीन देश के लिये नवीन प्राण चाहिये ।।

दुःख दर्द से भरी रहीं न वे कहानियां,
मौत जिस का नाम है रहीं न वे गुलामियां ।
बीत रात है गई प्रभात के प्रकाश में,
स्वतन्त्र देश की ध्वजा उठा रहीं जवानियां ।
आज नव्य भाव से करो सप्रेम वन्दना,
किन्तु बन्दनार्थ आज नव्य वीण चाहिये ।
नवीन वीर के लिये नवीन गान चाहिये ।।

धूप दीप हो सभी, नवीन सब सामान हो,
नवीन तुम नवीन हम नवीन आत्म-गान हो ।
कब किया सिंगार है पुराण पुष्प ने कभी,
नई नई बहार का जो कि प्राण वान हो ।
गिर गये हैं फूल वे, थे सुगन्ध हीन जो,
नव बसन्त के लिये नवीन हास चाहिये ।
नवीन हास के लिये नया विकास चाहिये ।।

भूत के प्रदीप की शिखा जो टिमटिमा रही,
बुझी पड़ी है देख लो नया प्रभात ला रही।
कब रुका तूफान है अशक्त से कभी,
समुद्र में तरंग भंग आज सांस ला रही।
धार बीच जब चलो न नाव याद तब करो,
धार पार के लिये नया प्रयाण चाहिये।
नये प्रयाण के लिये नया प्रयास चाहिये॥

नीर नेक बह गये मगर न धार यह रुकी,
मृत्यु शीष पर खड़ी मगर न जिन्दगी झुकी।
आ गया है यह वसन्त चल दिया है यह वसन्त,
बीत हम रहे हैं नित्य पर न कामना झुकी।
युग कभी नहीं रुका युग कभी नहीं झुका,
युग प्रवाह के लिये नवीन धार चाहिये।
नवीन धार के लिये नया प्रवाह चाहिये॥

ईंट नींव की बने कौन सा वह नौजवान,
गुम्बदों को देख मत ध्यान नींव का करें।
खाक में जो मिल सके कौन सा वह नौजवान,
और खाक पर चलें देश के नये चरण।
पंथ बन सके कि जो वही महान चाहिये।
नवीन देश के नवीन प्राण चाहिये॥

गंगादत्त शास्त्री 'विनोद'

जीवन की पतवार

तूफानों की ओर बहा दो जीवन की पतवार।

आज बजी भीषण रण-भेरी,
हिम-गिरी पर घिर गई अंधेरी।
धरती के कण कण में उमडी,
उथल पुथल की धार।

तूफानों की ओर बहा दो जीवन की पतवार।

उठा आ रहा चीन बवण्डर,
फटे जा रहे धरती अम्बर।
डटी हमारी फौजें बन कर,
काल रूप साकार।

तूफानों की ओर बहा दो जीवन की पतवार।

जाग उठा भारत का जन गन,
मचल रहे हैं सब के तन मन।
अभी बहाना होगा हम को,
जीवन का सब सार।

तूफानों की ओर बहा दो जीवन की पतवार।

आज वीरता का व्रत ले लो,
देश प्रेम की मदिरा पी लो।
इस पुनीत कर्त्तव्य दिशा में,
तन - मन धन दो वार।
तूफानों की ओर बहा दो जीवन की पतवार।

अरे, मोह पैसे का छोड़ो,
भेद - भाव का बन्धन तोड़ो।
अभी मृत्यु से प्रिय प्राणों का,
तुम कर दो अभिसार।
तूफानों की ओर बहा दो जीवन की पतवार।

कफन बांध लो सिर पर अपने,
भूलो जीवन के सुख - सपने।
हंस - हंस कर करते जाओ,
तूफानों से प्यार।
तूफानों की ओर बहा दो जीवन की पतवार।

●

राम कृष्ण शास्त्री

मङ्गल कामना

हे प्रभु वीर-भूमि भारत के,
जन-गण में भर दो विश्वास।
हम स्वर्गाधिक-मातृ-भूति हित,
भेद-भाव का करें विनाश॥

नव-जागृति की मधुवेला में,
शुद्ध शक्ति का हो संचार।
जीवन-रण में सफल-काम सब,
बन्धु-भाव का करें प्रचार॥

आशा-अरुणोदय की किरणें,
हृत्कुसुमों का करें विकास।
वाणी की वीणा से निकले,
नव-स्वर-संगम का उल्लास॥

सतत-परिश्रम से हर घर में,
खान-पान का हो भण्डार।
तन मन वचन पुनीत सभी के,
सहज-सिद्ध हों सब आचार॥

जन-जीवन की कठिन समस्या,
सरल - सरस - पथ पर उतरे ।
चिर-अतीत के गुण-गौरव की,
पुण्यमयी प्रतिमा निखरे ॥

सफल-साधना के बल पर हम,
भाग्यवान् गुणवान बनें ।
सुखी-शान्त-मन हो कर जग के,
हित - चिन्तक विद्वान् बनें ॥

विद्या - रत्नाकर से पालें,
हम भी तो कुछ रत्न अमोल ।
काल-तुला का इस तुलना में,
तब उतरे गा पूरा तोल ॥

दुष्ट-भावना कभी न मन में,
संयम - धन का ह्रास करे ।
नैतिक - सामाजिक - विधियों में,
सदा सत्य आवास करे ॥

मानवता का मान करें सब,
सेवा - व्रत स्वीकार करें ।
परम्परागत - मर्यादा से,
भारत का श्रृंगार करें ॥

ज्ञान और विज्ञान मिला कर,
नव - मस्तिष्क करें निर्माण ।
अणु-युग का भयभूत मिटाकर,
निश्चित हो सब का कल्याण ॥

शुभ देखें शुभ सुनें सदा हम,
भीतर बाहिर एक समान।
हों सशक्त चिर-स्वस्थ सभी के,
देहेन्द्रिय - मन - बुद्धि - प्राण ॥

बढ़े चलें सत्पथ पर निशि दिन,
कर्म वीर हो सच्चा नाम।
विश्व-पथिक हर नर-नारी का,
सुधरे लोक और परधाम ॥

सुख-संपत् का महा मन्त्र है,
एक संगठन बने सहर्ष।
ईश करें निज-कृपा दृष्टि यह,
मङ्गलमय हो नूतन वर्ष ॥

भान 'भार्गव'

जागो

जागो स्वप्न-मुग्ध मेरे देश के सपूत जागो,
मुस्कान बांटने वाले अमन के दूत जागो।
जिन लोरियों से मां ने था तुम को सुलाया,
जिस दूध ने जिस रक्त ने तुम को गरमाया!
जिस मां के आंचल में, जिस पवित्र गोदी में,
उस प्रात की अरुणाई में मकरंद संग खेले।
आती है हम से जिसकी अब तक भी सोंधी गंध,
उस माटी के कण कण की उस रक्त की सौगन्ध।
जागो स्वप्न-मुग्ध मेरे देश के सपूत जागो,

हे वीर! जागो कि तुमको मां का क्षीर जगाता।
धवल हिमालय पर छिटका, अरुण-अबीर जगाता,
फौलादी बाहें भाईयों की बहिनों का स्नेह जगाता।
प्रणयी परिणिता का प्रेम-अधीर-गेह जगाता,
कृष्ण की बांसुरी पै बौराई भोली गोपिका की कसम।
यौवन-माती ग्राम-बधु की चितवन तुझे जगाती,
हे शिव ताण्डव लयपर, शत्रु के मृत्यु दूत जागो।
जागो स्वप्न-मुग्ध मेरे देश के सपूत जागो,

तुम जागो कि सुहागिन आरती सुहाग सजाए।
तुङ्ग हिमालय के सीने की धधकी आग जगाए,
नाजुक कलाईयों में खनकती चूड़ियों की कसम।
भाल की बेंदी की कसम मांग के सिन्दूर की कसम,
तुमको लाखों नवबन्धूओं का अमर सुहाग जगाए।
अर्जुन औ प्रताप, शिवा औ गोबिन्द के,
गौरवमय अतीत के इतिहास की कसम।
वर्तमान पुकारता है "मेरे भूत जागो",
जागो स्वप्न-मुग्ध मेरे देश के सपूत जागो।

दुर्गा दत्त शास्त्री

प्रतिशोध लेंगे

देश के स्वातन्त्र्य पर, यह चीन घन सा छा रहा है,
राक्षसी आतंक के बल, दन-दनाता जा रहा है।
बज्र बन कर गिर पड़ो तुम, आततायी के दमन को,
प्रलय की हुँकार बोलो, बढ़ चलो इस के दफन को।

बोल दो ऐसी तबाही जिससे ज़ालिम जान जाये,
भद्रता विधवा नहीं है आज दुनियाँ मान जाये।
जुल्म की आंधी से डटकर जूझना है निपटना,
जंगली कानून लाठी भैंस का अब बदलना है।

वाहरे उन्मत्त अन्धे गजब छल-बल दम्भ तेरा,
मित्रता की आड़ में कपटी कमीना वार तेरा।
हम जुटे निर्माण हैं देश की बिगड़ी बनाने,
सब को अपना जानते हैं, नहीं कोई गैर माने।

तूने सोचा भारती तो खुद-बखुद ही लड़ रहे हैं,
प्रान्त, भाषा, मत मतान्तर, नाम पर ये भिड़ रहे हैं।
बात कुछ-कुछ ठीक थी, थे उलझते आपस ही में हम,
अपने घर में कुछ भी हो, पर अन्य हित सब एक हैं हम।

पर चलो अच्छा हुआ, यह घात तेरा फूट निकला,
तीर तेरी नीचता का विष बुझा था छूट निकला।
सरलता जाती छली है, कुटिलता कुछ कुछ फली है,
सत्य है पर याद रखना, विजय अन्तिम ही भली है।

संभलना बर्बर ! हमारे शौर्य की धारा बहेगी,
शान्ति में अब क्रान्ति की ज्वाला भयंकर जल उठेगी।

तृप्ति-रहित बलि-पंथियों की सुन रे हम आगे बढ़ेंगे,
उन शहीदों के लहू की शपथ है प्रतिशोध लेंगे।
हम तेरे खूनी इरादों की कबर अब खोद देंगे,
बन के तूफां नाव तेरी को डुबो कर ही रहेंगे।

विजयिनी मां का मुकुट है यह हिमालय और रहेगा,
इस से उलझा है तो बस, तू मौत का सामां करेगा।

☆

मनसा राम शर्म्मा 'चंचल'

दुश्मन को मौत सुला दें गे

आज पिपासित शस्त्र वृन्द प्रलयंकर झंझा ला दें गे,
वीरों की भुजाएं फड़क रहीं, दुश्मन को मौत सुला दें गे।

तोपों ने मुंह खोल लिया,
वे आग उगलने वाली हैं।
मदमत्त ऐरावत टैंकें ये,
दुश्मन को कुचलने वाली हैं।
ये वीर सिपाहियों की सेना,
दिखतीं यों घटायें काली हैं।

और भयंकर आंधी पर चढ़, दुश्मन-देश जला दें गे।
आज पिपासित शस्त्र वृन्द प्रलयंकर झंझा ला दें गे॥

कल तक जिसको मित्र कहा था,
जिस को जग तक पहुंचाया।
पंचशील के महा - मन्त्र को,
उच्च स्वरों से जिसने गाया।
जिसका हित निज हित समान,
दुनिया में हम ने अपनाया।

आज वही दुःस्वप्न ले रहा, उस को आज मिटा दें गे।
आज पिपासित शस्त्र वृन्द प्रलयंकर झंझा ला दें गे॥

जाग उठो ऐ हिन्दी वीरो,
देश पै आफत आन पड़ी है।

समय नहीं यह निद्रा का है,
परीक्षा की यह कठिन घड़ी है।

आज बता दो सारे जग को,
सारी जाति तैयार खड़ी है।

वीरों ने कब झुकना सीखा, जग को आज दिखा दें गे।
आज पिपासित शस्त्र वृन्द प्रलयंकर झंझा ला दें गे॥

★

वीर भारती जाग गए हैं

सुप्त सिंह के आनन पर चपत लगा कर भाग गए हैं,
उन्हें पता है वीर भारती सोए थे अब जाग गए हैं।

कायरता है सैन्य बढ़ा कर, रण में छुप छुप कर आना।
कायरता है मित्रघात औ' कायरता है पीठ दिखाना,
पंचशील यह क्या है तेरा एक शील भी तुझे न आया।

कायरता के अमर पुजारी, धुलने से कब दाग गए हैं,
सुप्त सिंह के आनन पर चपत लगा कर भाग गए हैं।

आज खड़ी सिर कफन बांध कर सीमा पर सीना ताने।
वीर धीर इस धरती मां की अजर अमर सन्तानें।
आओ आज बुलाते तुम को नेफा और लद्दाख पुनः,

उन्हीं की सींचें वैरि-शोण से उजड़ उखड़ जो बाग गए हैं,
सुप्त सिंह के आनन पर चपत लगा कर भाग गए हैं॥

आज भी हम अमन पुजारी तानी पर हमने तलवारें।
भारत वर्ष की रक्षा हित हम तन-मन सब कुछ वारें।
पंचशील का तेरा नारा समझ हमें अब आता है॥

काठ की हंडिया अब न चढ़ेगी, अब वे उड़ सब काग गए हैं।
सुप्त सिंह के आनन पर चपत लगा कर भाग गए हैं॥

★

नव जीवन का संचार करो

नव जीवन का संचार करो।

वैरी सीमा पर चढ़ आये।
प्रबल शक्ति ले कर बढ़ आए।

वीरो, प्राण हथेली पर धर,
नयनों में अंगार भरो।
नव जीवन संचार करो।

देश की सत्ता को ललकारा।
देश की रक्षा फर्ज़ हमारा।

देश बचाने वीर सजे हैं,
अरिदल का संहार करो।
नव जीवन का संचार करो।

जागो वीरो देश जगा दो,
और शत्रु को आज भगा दो।

हम सब को इतिहास कह रहा,
जगती के सब पाप हरो।
नव जीवन का संचार करो।

सुभाष 'भारद्वाज'

अमर कहानी

कवि की कलम सुनाती सुन लो आज़ादी की अमर कहानी।

उस दिन तो खोखला बुढ़ापा भी नवयौवन बनकर,
आज़ादी लेने को जूझा था वैरी से तन कर।

थी बस केवल आज़ादी की एक साध जीवन में,
हाथों में हथियार नहीं थे, पर साहस था मन में।

दहल गया अरिदल औ कांपा ब्रिटिश राज्य अभिमानी,
कवि की कलम सुनाती, सुनलो आज़ादी की अमर कहानी!

अत्याचारी राज्य मिटा दो यह उनका नारा था,
दुश्मन ने जिन को कोहीमा घाटी में मारा था।

छोड़ गये अरमान अधूरे जो तेरी झोली में,
लखते थे जो आज़ादी को दुश्मन की गोली में,

झलक रही उस चहल पहल में उनकी ही कुर्बानी,
कवि की कलम सुनाती सुनलो आज़ादी की अमर कहानी।

आज हिमालय की चोटी पर दुश्मन बढ़ आया है,
देखो, काली घट बन कर उस ओर उमड़ आया है।

भक्त सिंह, नेता जी की तुझ को है लाज बचानी,

छिन न जाये प्रताप, शिवा की यह अनमोल निशानी।
कवि की कलम सुनाती सुनलो आज़ादी की अमर कहानी।

अन्यायी का सीस उड़ा दो सिखलाती है गीता,
सत्य, धर्म के लिये लड़ा जो वह मर कर भी जीता।
सब को जीने देंगे पर जो हमें न जीने देगा,
काल-रूप बन उसकी हम को करनी है अगवानी,
कवि की कलम सुनाती सुनलो आज़ादी की अमर कहानी।

लाल किला, हल्दी घाटी, वह गढ़ चित्तौड़ पुराना,
याद आ रहा जिन्हें देख कर गुज़रा हुआ ज़माना।
जिसे जलाने को लाखों ने जीवन दीप बुझाये,
देकर स्नेह रक्त का हम को है वह जोत बढ़ानी।
कवि की कलम सुनाती सुन लो आज़ादी की अमर कहानी।

शांति-दूत हम सिखलाते दुनिया को भाई चारा,
'जिए प्रेम से मनुज' युगों से यही हमारा नारा।
अत्याचार नहीं करते हम, और न करने देते,
धमकी कभी न मानेंगे हम और न हमने मानी।
कवि की कलम सुनाती सुनलो आज़ादी की अमर कहानी।

खड्ग आज हर हाथ, होंट हर शंखनाद करता है,
आंधी बन हर वीर आज वैरी दल पर चढ़ता है।
मर मिटने की साध आज उमड़ी है जन-जीवन में,
महादेव हर मनुज यहां हर नारी बनी भवानी,
कवि की कलम सुनाती सुनलो आज़ादी की अमर कहानी।

☆

शंकर शर्मा 'पिपासु'

टक्कर

टक्कर जो पहाड़ से लेते,
छिन्न भिन्न वे हो हो कर के अपना जीवन भी खो देते।
टक्कर जो पहाड़ से लेते॥

क्या जाता है तब भूधर का,
जिस का नहीं कभी दिल धड़का,
जिस को नहीं किसी का खटका,

आंधी ओले बिजली बादल,
आएं बरसें कड़कें गरजें।

अचल अचल ही रहा सदा है हो जाते चेत अचेते।

टक्कर जो पहाड़ से लेते॥

जो पहाड़ के बसने वाले,
विपदाओं में हंसने वाले,
कहां दाव में फंसने वाले,

महा काल से भी लड़ जाते,
वही बहादुर वीर कहाते।

उन से लड़ कर अरि-सेनानी क्या जीवन की नय्या खेते।

टक्कर जो पहाड़ से लेते ॥

अपने घर में राज करो तुम,
अपनी अपनी करो भरो तुम,
कौन कह रहा यहां मरो तुम,

तुम्हें बुलाता कौन यहां है,
जो तुम मरने को आते हो।

किस कारण रण ठान रहे हो कौन बहक में कहो बहे थे।
टक्कर जो पहाड़ से लेते ॥
टक्कर जो पहाड़ से लेते।
छिन्न भिन्न वे हो हो कर अपना जीवन भी खो देते।

चुनौती

हम ही तुम्हें पछाड़ें गे।
जान पड़ेगा तभी तुम्हें जब हम जड़ मूल उखाड़ें गे॥
नाहक अपनी कटक कटाते, गीदड़ भभकी किसे दिखाते।
नहीं भागने भी पाओगे जब हम शेर दहाड़ें गे।
हम ही तुम्हें पछाड़ेंगे॥

लाख निकलते हों जो तारे, कर न सकें जग वे उजियारे।
मन्द पड़ेंगे वे सब जब रवि मुखड़ा तनिक उघाड़ेंगे।
हम ही तुम्हें पछाड़ेंगे॥

संभलो अरि-सेनानी संभलो, तनिक जा ठहरो कुछ दम लो।
बदला अभी चुकाएंगे हम लातों तले लताड़ेंगे।
हम ही तुम्हें पछाड़ेंगे॥

किन भूलों में भूले हो तुम, किन खुशियों में फूले हो तुम।
मेख तुम्हारे सिर पह हम ही विजय चिह्न की गाढ़ेंगे।
हम ही तुम्हें पछाड़ेंगे॥

तोपों की क्या मार सहोगे, मिट जाओगे तभी कहोगे।
जय भारत जय हिन्द तुम्हारी जग जन सभी पुकारेंगे।
हम ही तुम्हें पछाड़ेगे॥

ज्योतीश्वर 'पथिक'

ललकार

सावधान चीनी हत्यारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ,
अंगारों को हाथ जो डाला, अंगारे ही चुनते जाओ।

समझ नरम नाजुक सी कलियां हाथ जहां पर डाला है,
तुम क्या जानो उस उपवन के भीतर कितनी ज्वाला है।
पग में यदि सागर है उसके शोभे मुकुट हिमाला है,
फिर हर बच्चा इस धरती का देश पे मरने वाला है।

चाऊ माऊ के राज दुलारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ।
सावधान चीनी हत्यारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ॥

पंचशील की रचना करके तुमने उसका घात किया,
असुरों छलियों को छलने में तुमने बिलकुल मात किया।
हम ने आज़ादी की खातिर परिश्रम दिन औ' रात किया,
बात हुई क्या तुमने आकर हमला जो अज्ञात किया।

समझे चूहों के सरदारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ।
सावधान चीनी हत्यारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ॥

आर्य जनों की धरती है यह राम, कृष्ण और गौतम की,
नानक की, राना की धरती, शिवा से युग पुरशोतम की।
झांसी वाली रानी, की टीपू की प्यारी यह धरती,
भक्त सिंह की धरा अभी अभिमान जवाहर पे करती।

संस्कृति को मत ललकारो बात मेरी तुम सुनते जाओ।
सावधान चीनी हत्यारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ।।

इतिहासों को खोल के देखो सत्य के रक्षक कौन रहे,
अमन पुजारी कौन रहे हैं पाप के नाशक कौन रहे।
सहन शीलता और सभ्यता के प्रदर्शक कौन रहे,
वह संस्कृति और सभ्यता के उपदेशक कौन रहे।

इन पर एक नजर तो डारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ।
सावधान चीनी हत्यारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ।।

इतिहासों की गाथा खुद को अब कि फिर दुहराए गी,
जब भारत की सेना तुमको पेकिंग तलक भगाए गी।
जिस पत्ती को छू जाओगे वह ही हाथ जलाए गी,
सुलग उठी है जो चिंगारी वह शोला बन जाए गी।

हिम्मत है तो अब ललकारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ।
सावधान चीनी हत्यारो, बात मेरी तुम सुनते जाओ।।

'मधुकर'

गीत

जागो रे, जागो रे,

जागो वीर भारती।

जननी पुकारती,

जागो रे, जागो वीर भारती॥

जो समय पे काम न दे,

आन वह किस काम की।

जो अरि से भिड़ न जाए,

शान वह किस काम की।

प्राण-दीप बाल के,

ऊतारो मां की आरती,

जागो रे, जागो रे,

जागो वीर भारती,

जननी पुकारती।

जागो रे, जागो वीर भारती॥

हिम-गिरी के भाल पर,

क्यों किसी का पांव हो!

अपने देश का ऊजाड़,

एक भी न गांव हो!

सीमाएं देश की हैं,
पथ तेरा निहारती।
जागो रे, जागो रे,
जागो वीर भारती,
जननी पुकारती।
जागो रे, जागो वीर भारती॥

अमर है शहीद वह,
वतन पे जो निसार हो।
है हृदय वही अमर,
वतन से जिस को प्यार हो।

हों सपूत शूर जिसके,
मां नहीं वह हारती।
जागो रे, जागो रे,
जागो वीर भारती,
जननी पुकारता।
जागो रे, जागो वीर भारती॥

●

वेद्पाल 'दीप'

गीत

हम भारत मां के जाये हैं,
जिसने हम को पाला है।

रासकुमारी से लद्दाख तक,
धरती की शोभा न्यारी।
इस ने जनमें अर्जुन जैसे,
वीर सदा ही बलकारी।
हम को है इस की मिट्टी,
अपने प्राणों से भी प्यारी।
कभी उजड़ने न दें गे,
हम इस की हरी भरी क्यारी।

चलो बुलाता आज हमें,
उत्तर में खड़ा हिमाला है।
हम भारत मां के जाये हैं,
जिसने हम को पाला है॥

आज पुनः इस धरती पर,
विपदा के बादल मंडलाए।

वीर शहीदों के यश पर,
न आंच कभी आने पाए।

सीस तली पर धर कर बेटे,
मां की रक्षा को आए।

आंख उठा कर जो भी देखे,
जीवित जाने न पाए।

विजय हमारी होगी निश्चय,
फूट रहा उजियाला है।
हम भारत मां के जाये हैं,
जिसने हमको पाला है॥

गीत

उठो उठो ऐ वीर जवानो !
रक्त मांगता देश !

न कोई मुस्लिम न हिन्दू,
हम हैं सब हिन्दोस्तानी।
बहुभाषी जन गण की अब तो,
एक हो चुकी है वाणी।

इक दूजे का भेद मिटा है,
मिटे हैं सारे द्वैष।
उठो उठो ऐ वीर जवानो,
रक्त मांगता देश !

अपनी सरहदों की खातिर,
प्राण न्यौछावर कर देंगे।
एक सीस क्या सीस कटा कर,
मां की झोली भर देंगे।

जान हथेली पर रख कर,
तुम मां का हर लो क्लेश।

उठो उठो ऐ वीर जवानो.
रक्त मांगता देश !

कसम तुम्हें है भगत सिंह की,
कसम है रानी झांसी की।
कसम है उनकी जिन्हों ने,
हंसकर, चूमी रस्सी फांसी की।

काम शहीदों का अब पूरा,
कर दो जो है शेष।
उठो उठो ऐ वीर जवानो !
रक्त मांगता देश !

K. P. SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No ....
Date..........
JAMMU